मो र पां ख

ओंकार पारीक

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर

प्रकाशकीय

राजस्थान साहित्य अकादमी ने अपनी प्रकाशन नीति के दूसरे दौर में प्रवेश किया। हमने पहले दौर में विभिन्न विधाओं के सभी परिचित रचनाकारों को संकलित करने का प्रयास किया है। इस दूसरे दौर में हम हमारे कृतिकारों के स्वतन्त्र संग्रह प्रकाशित करने जा रहे हैं।

अकादमी के राजस्थानी भाषा एवं साहित्य विभाग द्वारा स्वीकृत ओंकार पारीक का "मोरपांख" अकादमी द्वारा प्रकाशित प्रथम राजस्थानी कविता संग्रह है। हम इस क्रम को आगे बढ़ायेंगे।

ओंकार पारीक हिन्दी और राजस्थानी के प्रतिष्ठित कवि हैं। निरन्तर सृजन और हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनका प्रकाशन आपकी विशेषता है। सम्प्रति आप अकादमी में सहायक सचिव के पद पर कार्य कर रहे हैं।

प्रस्तुत संग्रह आधुनिक राजस्थानी कविता की अनुभूतियों की विविधता के साथ साथ लोकगीतात्मक सौष्ठव और प्रगतिशील मनोभूमि प्रदान करता है।

पाठकों व समीक्षकों की सम्मति का हम स्वागत करेंगे।

उदयपुर
दिनांक १०-३-७०

मंगल सक्सेना
सचिव

अरथाऊ बात

भाव री चोज। आप सांभो। म्हारी आतम री सुरधारा थारै हिवड़ा-हिवड़ा मांय बे'वती रै'वै।

आप रा बोल। म्हारा बोल। अै गीतड़ला पण कोड सूं पाळ्या अर पोखयोड़ा है। अै थारो हेत चा'वै—हेता सूं अै बधसी।

चोखा तो थारा। कोजा तो थारा। परोटणवाळो सगळांनै परोटै। अरपण री ई वेळा मे—हूं म्हारै मून मं म्हारो अर थारो साचो हेताळू समझूं।

बीकानेर

१२ जुलाई १९६२

ओंकार पारीक

गीत-सारणी

भूझै अठे कठै रे कोई शकतसिंह परताप महान—आ धीरां···

'पाबू' 'गोगो' 'जांभो' 'तेजो'
'हड़बू' 'रामदेव' 'जसनाथ'
'पृथ्विराज' 'सूरजमल' 'आढा'
'बंक' 'उमर' कवियां रा साथ

बूझै अठे कठै रे कोई किण माटी सोया ए प्राण ? आ धीरां···

आडावळ अड़ियो आंटीलो
चम्बल लेवै चपळ हिलोर
छोळ छोळ छळकोजै पुष्कर
गंगनहर नहरां सिरमौर

पूछै अठे कठै रे कोई इण नै कुण कै' रेगिस्तान ? आ धीरां···

जैपर नगरी घणी सुरंगी
उदियापुर आछो अजमेर
जोधाणो - बीकाणो बंको
जस जोगो जग जैसलमेर

घूजै अठे कठै रे कोई पग बैरचां रा मिटै निसाण—आ धीरां···

गीत : देश री मरजाद रो

•

आ बंधी बुहारी लाखरी
आ खुलियां पाछै खाखरी

कंवत धणी पुराणी सुणज्यो, साखी सूरज बापरी

ओ जो मेणत सांवी हाथरी
थे इण री राखो खातरी

मोल करै माखण रो सगळा, कीमत कोन्या छाछ री !
आ बंधी बुहारी···

थे सेठां सांभो ताकड़ी
रजपूतां सांभो पागड़ी

पंडितां पोथी पतरा सांभो. थे करो कमाई सांतरी !
आ बंधी बुहारी···

थे जोवो थांरी टापरी
थे गत पैचाणो सांपरी

घर रा भेदी लंका ढावै, सीख सुणो इतिहास री !
आ बंधी बुहारी···

कोई खोले सम्पत गांठड़ी
म्हारी धणी कटीजै आंतड़ी

भाई भाई लड़ो भिड़ो मत, सौगन गंगा मात री !
आ बंधी बुहारी···

भूझे अठे कठै रे कोई शक्तसिंह परताप महान—आ धोरां…

'पाबू' 'गोगो' 'जांभो' 'तेजो'
'हड़बू' 'रामदेव' 'जसनाथ'
'पृथ्विराज' 'सूरजमल' 'आढा'
'बंक' 'उमर' कवियां रा साथ

बूझे अठे कठै रे कोई किण माटी सोया ए प्राण ? आ धोरां…

आडावळ अड़ियो आंटीलो
चम्बल लेवै चपळ हिलोर
छोळ छोळ छळकोजै पुष्कर
गगनहर नहरां सिरमौर

पूछै अठे कठै रे कोई इण नै कुण कै' रेगिस्तान ? आ धोरां…

जैपर नगरी घणी सुरंगी
उदियापुर आछो अजमेर
जोधाणो - बीकाणो बंको
जस जोगो जग जैसलमेर

धूजै अठे कठै रे कोई पग बैरचां रा [illegible] धोरां…

गीत : धरती री पुकार रो

•

हीमत नै मतहार रे
तूं चेत चेत मोट्यार रे
सैंठा घणा सूकिया थारा
तूं जग सिरजण हार रे
धरती करै पुकार रे !

तूं पढ़ियोड़ो तूं गुणियोड़ो
थारो खेत उजाड़ क्यूं ?
जिण माटी में सोनो दबियो
बिसरयो गळी गुवाड़ क्यूं ?

घड़ियक बैठ बिचार रे
धरती करै पुकार रे !
हीमत नै मत हार रे !!

नुवें नगर तूं नित उठ जावै
दफ्तर दफ्तर धक्का खावै
बेरो थारो पड़्यो दुड़्योड़ो
इण री तरफ ध्यान नी जावै

तूं किण रो हकदार रे ?
धरती करै पुकार रे !
हीमत नैं मत हार रे !!

नुंई खाद रा बीज नुंवोड़ो
हळ नुंवो गा गीत नुंवोड़ो
नुंई दया औजार मंगा तूं
कुयो खुदा तूं जिको बुड़पोड़ो

थारै मैणत री जयकार रे !
धरती करै पुकार रे !
हीमत नैं मत हार रे !

गीत : दूधां धोई धोरड़ी रो

•

म्हारे हिवड़े में जोत जगावै रे ! ऽऽऽ आ दूधां धोई ऽऽऽ धोरड़ी ऽऽऽ
म्हारो मनड़ो मोद मनावै रे ! ऽऽऽ जद कोई गावै ऽऽऽ गोरड़ी ऽऽऽ
म्हारा ठमक पगलिया जावै रे ! ऽऽऽ जद कोई नाचै मोरड़ी ऽऽऽ

जूनो बोदी बाड़ां लुकिया
तीखा बोलै तीतरिया
इटली बिटली कान कतरणी
रमता देखूं टींगरिया
म्हारी आंखड़ल्यां छक जावै रे ! ऽऽऽ जद ताती भाजै ऽऽऽ टोरड़ो ऽऽऽ
आं दूधां धोई ऽऽऽ धोरड़ी ऽऽऽ

पाणत करता करसा देखूं
हरिया हरिया तरवरिया
सिझ्या ढळती कुरजां लुळती
डाकै भरिया सरवरिया
म्हारा गीतड़ला अणमावै रे ! ऽऽऽ जद लूमै रे झूमै ऽऽऽ बोरड़ो ऽऽऽ
आ दूधां धोई ऽऽऽ धोरड़ी ऽऽऽ

पांल्यां फुलांती : टांग्या धुजांती,
ढेंकों बोलै ढेलणियां
विरह रा मारया मोरया डोलै
दुखड़ो तो जाणै झेलणियां
म्हारी आंतड़ल्यां फळपावै रे ! ऽऽऽ जद विरखा चूवै ऽऽऽ ओरड़ी ऽऽऽ
आ दूधां धोई ऽऽऽ धोरड़ी ऽऽऽ

अब रिड़क्स देसूं बाड़ी भैंस्यां
दूस्यां करसी गावड़ियां
बाखड़ियां पगोल्यां बड़ती
मुळकै पुळकै डावड़ियां
हारी सेणजियां हरखायां रे ! ऽऽऽ जद मायड़ गावं ऽऽऽ लोरड़ी ऽऽऽ
आ दूधां धोई ऽऽऽ धोरड़ी ऽऽऽ

गीत : किरसाणां रो

•

जद धरती धीरा उगळै रे
जद हळियो माटी उथळै रे
जद सूवां कानां निकळै रे
जद कण कण माचै पिरळै रे
थांरी कूण करै रे रिछपाळ ?
···म्हारो सांवरियो !

जद डांफर बाजै उतरादै
थे धूजो ऊभा चौभाटै
थांरा लीर लीर गाभा फाटै
जद धण रोंतो रातयां काटै
थांरो कूण बणै रे प्रितपाळ ?
···नटवर नागरियो !

जद बादळ गरजै घमक घमक
जद बीज झबूकै झमक झमक
जद धारां छूटै रमक झमक
जद चुवै टापरी टपक टपक
थांरी कूण करै रे रुखवाळ ?
···म्हारो सांवरियो !

जद बोहरो कुड़की ले आवं
जद अफसर घुड़की दे जावं
जद दोखी खुभतो कं' जावं
जद कसक काळजे रं' जावं
थांरो कूण बणं रे किरपाळ ?
…नटवर नागरियो !

जद मांदा भूखा थे बिळखो
जद आंसू आंख्यां थे टळको
जद खड़ा कचेड़्यां थे कळपो
जद करजे दबिया थे सुळगो
थांरो कूण करं रे सम्भाळ ?
…म्हारो सांवरियो !

गीत : धन-धीणे रो

•

'गऊ माता गोमती, टोघड़ियो गणेशजी'
आ कंवत साची रे भायां, भाखं भारत देशजी
आं रो वंश रुखालो देखो—ओ किसनचन्दर रो देशजी
—ओ राधाकिसन रो देशजी
—ओ गोपीकिसन रो देशजी
गऊ माता···

जिण धरती में घो'र दूध री, सुणां'क नदियां वै'ती रे
वो'धन आज धण्यां नैं बिलखै, धन बिन सूनी धरती रे
दूध दही घी घणो मिलावट, लगी काळजै ठेसजी
गऊ माता···

गायां पड़ी बंसकै भायां, चौपट कारोबार रे
बाळध दोळै पड़्या बापड़ा, भूखा अर बीमार रे
खेती उजड़ी नसलां बिगड़ी, माच्यो घणो कळेस जी
गऊ माता···

दूध पूत देवण री सोगन, गई समन्दर पार रे
गोवणियां में ऊंघो हुयगो, धाणीड़ै री धार रे
रगत बायरा डील सतावै. काया रोग हमेश जी !
गऊ माता···

मोरवांत

ए नान्हड़िया टाबर देखो, दूध दही नै तरसे रे
आंतड़ल्यां कळपावै आंरी, आंख्यां आंसू बरसे रे
दूध नहीं तो पूत नहीं रे, फेर बंचचौ कंई शेष जी !

गऊ माता…

गीत : विलोवणै रो

•

ऊंडो ऊंडो फिरै भेरणो, झागां भरी बिलोवणी
झांझर कै उठ झाल नेतणो, करै बिलोणो मोवणी
कोई आंगण ऊभी सोवणी

चुड़लो खणकै नेवरचां ठणकै, छाछ झबळका खायजी
मिनड़ी ताकै टाबर झांकै, बाटकड़चां खिसकाय जी
माखण लूंदा लूंद मीतरचो, पण बहुवड़ डरपाय जी
बा कीया घालै टाबरियां नैं, बैठी चूल्है जाय जी
नाख बाटक्यां टाबर रूस्या, बांरी सूरत हुयगी रोवणी
हियो पसीज्यो उठी'क सासू, सामी ढूकी जोवणी
बा तो पाछी मुड़गी मोवणी
आ आंगण फळपै सोवणी
आ झागां···

गाळचां काढण लागी सूढळ, पाड़ोसण सोखाई जी
किटक्यां भरती आंगण फिरतो, जाणै काळका माई जी
माखण लै ओरै में बड़गी, आडी खाट ढळाई जी
हाथ सुमरणी जीभ कतरणी, बेट्यां री भड़काई जी
टाबरियां नी माखण चास्यो, हुयो कळह री बोवणी
कळझळ करै काळजो कांपै, आ कामण धांपण धोवणी
ईरो आंसू भीजो ओढणी
आ तो आंगण झरपै मोवणी
आ झागां···

हारचा पाचपा मिनख सेत सूं, जद सिक्या घर आया जी
देखी बूढळ यड़ बड़ बोलं, घर घर धूजं काया जी
घुसरं पूछ जेठजी पूछ्यो, पण समझी नो माया जी
'दादी माखण कोन्या घाल्यो !' टाबरिया बिलखाया जी
खाट परीकर दादं माखण, दोयी हरखो मोवणो
मन्नं राम उठावं कोनी, बूढळ भड़को चौगुणो

ओ जी यहुयड़ हरखो सौगुणो
आ आंगण मुळकं सोवणो
आ झागां···

ईं वैरी माखण रं खातर, बात बधी अणहोवणो

गीत : पिणघट रो

•

डोगी पतळी पोंपळी पसवाड़ै प्यारो पिणघटियो
आंख्यां रो तारो पिणघटियो
ओ कामणगारो पिणघटियो

सूरज री सतरंगी किरणां, पूरब री पिणिहारयां रे
आभै सूं ठमक ऊतरै, सुरगां री सिणगारयां रे
पंछीड़ां रा मुजेरा लेंती, सुणती घण किलकारयां रे
पिणघट घाट कोडाई नाचै, रूपळ राज कुमारयां रे
धिन धिन रे पिणघटिया थारो, भाग सरावै सूवटियो
डोगी पतळी…

पोमीजै 'घुरसली' फूंडियै, धुरै 'कमेड़ी' लूमैरे
'चिड़ी' घोड़िए बैठी सोवै, 'सुगनां' मूण लटूमैरे
घूमर घालै 'सोन चिड़कली', 'तीतर' सारण घूमैरे
'कागलियो' कुरळावै खेळो, मगन 'मोरियो' झूमैरे
धिन धिन रे थोरां रा सोभी, थारो मारग झोणो अटपटियो
डोगी पतळी…

दोय घड़ी दिन चढ़ियो थारै, घाट झमा झम माचै रे
भरै बेवड़ा कुळवहुवां कोई, लुळ लुळ भांडा मांजै रे
घणो हतायां थात्यां करत्यां, कामणियां कद थापै रे
साइन्यां मिल करै मसकरयां, लजवन्त्यां घण लाजै रे
धिन धिन रे पिणघटिया तू तो, मदधर मोवण गळपटियो
डोगी पतळी…

तें कितरी कितरी विणजारां री, बाळथ तिरस बुझाई रे
जुगां जुगां रै जातरियां री, तें हिय जोत जगाई रे
असरण-सरण इसो कुण जिण री, मेहमा सदा सवाई रे
तन्ने देख तिसायो म्हारो, आंखड़ल्यां भर आई रे
धिन धिन रे गहभरिया थारो, हेत पताळां पिरगटियो
डोगी पतळी…

सैंहरां भज मत
करजां दब मत
गरजां कर मत
हळ खड़
थक मत

नट मत रे ! नट मत करसा बीर
थारो द्रुपदां आळो चीर
थांमें सै'स जणां रो सीर
करसा भाई रे ! पाछो पड़ मत...

गीत : गाडिए लुहारां रो

•

गाडघां जुतिया राता माता, बळधां नैं बुचकार
बांरैं गळपटिया कर त्यार
बांरैं गळ घटघां सिणगार
चाल्या रे ! चाल्या गाडिया लुहार

चाल्या मूंछयांळा मोट्यार
चाल्या आंटीला सिरदार
ओ जी रंगीला सिरदार
कोई हठीला ऽऽऽ कोई बादीला ऽऽऽ, कोई गरबीला सिरदार
चाल्या रे ! चाल्या गाडिया लुहार

अै गावां गावां नगरां नगरां, डोलै मांडै नी घर बार
गाडी जीणो गाडो मरणो, गाडो परणो लोकाचार
आंरैं सुख दुख एकळ सार
मनांता रुत रुत रा तींवार
चाल्या रे ! चाल्या गाडिया लुहार

अै जंगळ मंगळ करै मानयो, वसै जठै रे अै दिन च्यार
धान कूटती चाक चलांती, गीतां मगनो आंरी नार
चांदणो रातां रंग अपार
अमावस कदयक घोर अंधार
चाल्या रे ! चाल्या···

मैंणो मानै नहीं मजूरी, अै घालै छांडै री धार
भूखा नागा अै रै'य जावै, पण नी मांगै हाथ पसार
आंरो नेम धरम करतार
निभावै सिभरथ सिरजणहार
चाल्या रे !...चाल्या...

जूनो बोदो लोबो गाळै, कूटै पीटै घड़ै ओजार
चकू चीमटा बरछ्यां कुड़छ्यां, छुरयां सिडास्यां घणी संवार
धूंकड़ा भभकीजै अंगार
धमाधम उडै घणा री मार
चाल्या रे !...चाल्या...

चाकी. चूल्हा ऊंखळ मांचा, बरतण गाभा कस हथियार
कांकड़ बारै डेरा देवै, हाटां बेचै माल बकार
आंरै मैणत री जयकार
आंरै सम्पत री बळिहार
चाल्या रे !...चाल्या...

आंरा टाबर अणभणियोड़ा, आंनै कूण करै रे प्यार ?
कमर तोड़ मंहगाई भाई, घणी गरीबी घण परवार !
से'वै जुगां जुगां सूं मार
कै'वै किण नै नैड़ा जा'र
चाल्या रे !...चाल्या...

अै जुगां जुगां रा रमता जोगी, मायड़ आंरी करै पुकार !
घणा घणा भटकीज्या मोभ्यां, गाड्यां मोड़ो थे सिरदार
ओ नीला घोड़ा रा असवार !
थारा मानै कोनी रे सिरदार
अै तो बादीला अै तो आंटीला, अै तो गरवीला सिरदार
चाल्या रे !...चाल्या...

गीत : गुवाळियां रो

•

लाम्बो गेडियो चलांतो, डोढो डिचकारघां लगातो
लरडघां छाळघां नं चरांतो—
गुवाळघो जावै झूमतो
गुवाळघो गावै लूमतो
ओ रेवड़ घूमतो
एवड़ झूमतो रे घूमतो रे लूमतो!

ठडी खेजड़लै री छांव
ईं'रा राता ताता पांव
ऊपर बोलै कागो 'कांव'
इरो अळगो घणो गांव
नान्हा उण्यां नैं ऊंचातो गोगड़ घेटा घेर लांतो
सूखा टूकड़ा चबांतो—
लाम्बो गेडियो···

माथै पोतियो संभाळ
भागै मन में लियां झाळ
ओछो धोतियो उछाळ
करै एवड़ री रुखाळ
मधरो अलगोजो बजांतो आलै मगरै नैं गुंजातो
म्हारै मनड़ै नैं रिझांतो—
लाम्बो गेडियो···

ईंरी धोळ्या मखराळ्या
माथो घुमगो मूंदरवाळ्यां
ईंरी काळ्या धोळ्या भाळ्या
टाबर मेनं थे दे ताळ्या
निरधा माता नं मनातो गांव गोंवड़ं में आतो
धनड़ो धणियां नं संभळातो—
लाम्बो गेडियो…

इण नं पारी पेट बुड़ावं
इणरी काया भूख सतावं
धण नं बाल्यां में बिळमावं
टाबर टातो मूं लगावं
जुगां जुग मंणत जोत जगातो दुख रा दिनड़ा नं बिसरातो
धीरज मोटी बात बतांतो—
लाम्बो गेडियो…

गीत : बुवारी रो

•

म्हारे मन मोवणी ए !
सुरंगी सोवणी ए !

बुवारी म्हांसू मूंढे बोल
बुवारी घूंघट रो पट खोल
बुवारी जीवण रो रस घोळ

तूं ब्राह्मण री जात बुहारी ! नित उठ शबद सुणावै
एक बिरम दूजो नी कोई, साची सीख सिखावै
ज्ञान पथ जोवणी ए !
बुवारी···

तूं खत्री री जात बुवारी ! कमर कस्योड़ी आवै
'वीरां हंदो मान जगत में' घर घर गीत गुंजावै
अमर जग होवणी ए !
बुवारी···

तूं बाण्यां री जात बुवारी ! घर घर सम्पत लावै
'बांट खाय सो बैकुंठ जावै' मंगळ पाठ पढावै
मनां मळ धोवणी ए !
बुवारी···

तूं गुरु री आण कुवारी ! तेरा नेम निभावं
'हरि को भजै सो हरि का होई' जिनको हेत जतावं
प्रेम-पिया दोवली ए !
कुवारी···

गीत : पंछीड़ां रो·

•

चीं चीं च्युप च्युप च्यारूंमेर
आं पंछ्यां री घेर घुमेर
हरिया भरिया रूंखड़लां में—
राम भजन री लागी टेर
चीं चीं च्युप च्युप···

उड उड बैठे उचकै फुदकै, अै पंछी मन मोवणा
सिन्दूरी आभै रै हेठै, चहकै पछी सोवणा
झीणी झीणी अन्धारै री, चादर तणती जाय
पींपळ पानां सूरज किरणां, छिन छिन छणती जाय
जाणै कंई अै भणती जाय ?
चीं चीं च्युप च्युप···

पून चले नागोरण पंछी, सिचला अै कद रै'वणियां
अै बिजळ्यां पाखां में दाबै, इकळंग पंथी बैवणियां!
सुंई सांझ पिरभात मंडै, आं पंछीड़ा रा मेळा
मदघर रै परबार कठै आ, सुगणी मंगळ बेळा ?
इसड़ो रूप कठै दरसाय ?
चीं चीं च्युप च्युप···

देखो रे ! कोई नान्हा चिड़िया, होठे होठे बोलें
लागे लागे अं सायद रै, डाळां डाळां डोलें
घणा बेसुरा कागा सुगरा, बंठ्या धान लगाय
एकंई सागे कांता कांता, सरणाटो छा जाय
जीव में जीव घणो संताप
चीं चीं च्युर च्युर···

गीत : नान्हे मोरिये रो

•

झूंपड़ल्यां सरणांवतो
टावरिया हरखांवतो
आंगण धूम मचांवतो

म्हांनै वालो लागै रे, नान्हो मोरियो
म्हांनै आछो लागै रे, सुगणो मोरियो

ओ हरिए हरिए खेतां उडतो, डाकै बावड़ियां
ओ पाणत करता करसा देखै, भैंस्यां गावड़ियां
ओ सरवरियै री पाळयां बोलै, घचतो तावड़ियां
ओ पाणोड़ै नै आंतो जांतो, निरखै डावड़ियां
नान्हो मोरियो !
म्हांनै वालो लागै रे…

ओ मायड़ नै उडोकै सिख्या, पोलड़ल्यां नै डाळ रे
ओ नान्हो चूंच उपाड़ै भूलो, बैठ्यो पीपळ डाळ रे
ओ कदयक जोवै गढ री बुरजां, कदयक सामो ताल रे
हूकण हूवयो मायड़ भाई, हेमां लियो सम्भाळ रे
नान्हो मोरियो !
म्हांनै आछो लाग रे…

गीत : रूपाळी चानणी रो

•

डीगा डीगा धोरां माथै
रू'खां बैठ्या मोरां माथै
रमता छोरी छोरां माथै
दूधां भरया कटोरां माथै

आ घूमर घालै चानणी
आ झूम'र चालै चानणी

आ चम्पक वरणी रूप निसरणी, जाणं'क हिरणी चानणी
आ 'मरवण' ज्यूं मन भावणी
कोई 'ढोलो' निरखै रे !
जाणं कामणी आ चानणी !
आ चानणी...२

दुखिया सुखिया लोगां माथै
ढं'र आकड़ां फोगां माथै
सूना बुरज झरोखां माथै
मिन्दर डोल्यां धोरां माथै —
आ घूमर घालै...

आ हीरां झरणी मोत्यां भरणी, सरग वैतरणी चानणी ?
आ 'आभळ' हियै हरखावणी
कोई 'ळींवी' निरखै रे, !
जाणै रागणी आ चानणी
आ चानणी···३

नुंवा परणियां दूल्हां मायं
नवळ बीनण्यां फूलां मायं
ठाण परीन्दा चूलां मायं
नानड़ियां रै भूलां मायं—
आ भूम'र चालै—

आ चंवर ढुळन्ती भंवर रिझन्ती, कंवर रमन्ती चानणी ?
आ 'सैणी' सुरंग सुहावणी
कोई 'बींझो' निरखै रे !
जाणै नाचणी आ चानणी
आ चानणी···३

सूंटां बंधिया पोळयां मायं
छान झूंपड्यां पोळयां मायं
बालळ बाड़ां डोळयां मायं
सरवरिए रो छोळयां मायं
आ घूमर घालै···

आ रेतां रमती सेतां खिमती, हेतां बधती चानणी ?
आ 'ऊजळी' रिझावणी
कोई 'जेठो' निरखै रे !
जाणै रास रावणी चानणी
आ चानणी···३

पीतळिया पिल्लाणां माथै
तुळसीजी रै ठाणां माथै
कुवा बावड्यां ढाणां माथै
खेतां रै नै डूंगां माथै
आ भूमर चालै···

आ शाखां बधती आकां चढ़ती, ढाकां ढळती चानणी
आ 'ऊमा' हेत बधावणी
कोई 'मालो' निरखै रे !
जागै मानणी आ चानणी
आ चानणी···३

पींपळियै रै पानां छणती
नदियां नाळां छत्तर तणती
रूई जोत री जाणं पुणती
दरद कथा दुखियां री सुणती
आ घूमर घालै···

या आंगण डोढी ढोल्यां पोढी, जाणं'क सोढी चानणी
आ 'भारमली' चित चांवणी
कोई 'बापो' निरखै रे !
जाणं'क पूनम पावणी
आ चानणी···३

गीत : विरखा

•

रातो मातो अम्बर दीसै, धरती धारां न्हाई रे
डोगा डूंगर हरिया भरिया, नदियां घण उफणाई रे
लहर लहर सरवरिया लहरचा, धोरां धूंधळ छाई रे
हरखै लोग लुगाई रे !
विरखा री रुत आई रे

मोर-ढेलड़यां धूमर घालै, भूंपड़ल्यां सरणाई रे
ठंडी मधरी पून चलै रे, बीज खिवै अणमाई रे
जूंनी बोवी बाड़ां भोजी, धरती घण महकाई रे
हेडर टेर लगाई रे !
विरखा री रुत आई रे

घोर अंधारी रातां आ कुण ! तेजं तान उठाई रे
अलगोजै री गहभर गाजां, सुण काया मस्ताई रे
पिऊ पिऊ मोरां री बोल्यां, वन वन धूम मचाई रे
उफण्या ताल तळाई रे !
विरखा री रुत आई रे

चूवण लागी टापरड़यां रे, दुनियां नं दुखदाई रे
भूखां लचूणां दुखिया बंठ्या, टाबर लोग लुगाई रे
मोटा डोकर खासै-धासै, बैरण बादळवाई रे
घर घर घणी हताई रे !
विरखा री रुत आई रे

हळियो फाड़ इंधण करतां री, सांई करी सुणाई रे
पांख पंखेरू हिरण-जानवर, तिरसां तिरस बुझाई रे
मिनखां हन्दो रह्यो मानखो, रूपळ छांट्यां आई रे
सावां साम सवांई रे!
विरखा री रुत आई रे

गीत : हरख रो

•

रो मन रमग्यो राम हरिए खेतां में—खेतां में रमता मोरयां में
रयां री मदछक टोळयां में, सरवर री छळ छळ छोळयां में

खेतां में म्हारो राम रमै
तां में म्हारो श्याम रमै
सुणज्यो रे ऽऽऽ !
खेतां में म्हारो ध्यान जमै, आं खेतां में म्हारो ज्ञान रमै !

आं गोरा गोरा धोरां मे—
रमतोड़ा छोरा छोरयां में
सिट्यां री किलक किलोळयां में—
गीतां में गूंगी गोरयां में
म्हारो मन रमग्यो राम···

वाला घेरा घावणियां
मगना मोद मनावणियां
सुणज्यो रे ऽऽऽ ······ !
करसा सोला गांवणियां—तेजै री तान उठावणियां !

ओ हिवड़ो हरखै होठयां मे—
तीजां - टोवाटयां - गोरयां में
हिरणां री उडतो जोड़यां में—
चंदयां में चांद चकोरयां में
म्हारो मन रमग्यो राम······

आ मरू भोम रसवन्ती रे
धण खेजड़लां फळवन्ती रे
कोई सुणज्यो रे ऽऽऽ ······ !
आ धणी ग्यान गुणवन्ती रे ! आ धन-धीणं धनवन्ती रे

जाळोट्यां बोर निंबोळ्यां
वाड़ां भूंपड़ल्यां पोळ्यां
कोई डोगी डोगी डोळ्यां
ठाणां बंधिघोड़ा घोळ्यां
म्हारो मन रमग्यो राम···

गीत : बेटी री भुळावण रो

•

सुणो म्हारा रतन कुंवर सा
सुणो म्हारा सजन कुंवर सा

म्हारी चांद कंवर नैं सोरी राखीजो
क' म्हारी चम्प कंवर नैं क' म्हारी फूल कंवर नैं
म्हारी रूप कंवर नैं सोरी राखीजो
क' म्हारी सूरज कंवर नैं !

आ तो सातां घीरां घाली ओ ! म्हारा रतन कंवर सा
आ तो बाबो सा री लाडली ओ ! म्हारा सजन कंवर सा

इंनैं घणै हेत सूं राखीजो
इंनैं अळगी कदयन नाखीजो
म्हारी चांद कंवर नैं ··

इंनैं याद सहेल्यां री आवैली म्हारा रतन कंवर सा
आ आंसूड़ा ढळकावैली म्हारा सजन कंवर सा

इंनैं झुलड़ं में पीरम बंधा दीजो
इंनैं सावणिये पहूंचा दीजो
म्हारी चांद कंवर नैं···

जे थांरी मायड़ रोस करै म्हारा रतन कंवर सा
जे थांरी बैन्यां खीज भरै म्हारा सजन कंवर सा

इनै भूल पड़्यां मत धांडीजो
इनै सेन्यां में समझा दीजो
म्हारी चांद कंवर नै…

बेटी देय म्हेनो बेटो लीनो ओ म्हारा रतन कंवर सा
म्हारी पत राखो गुणावन्ता ओ म्हारा सजन कंवर सा

इनै हियै डोर सूं बांधीजो
इनै रूस्योड़ी नै मना लीजो
म्हारी चांद कंवर नै…

म्हारै हिवड़े री आशीस फळो म्हारा रतन कंवर सा
थांरी सा'य करै जगदीश जुगां जुग जियो कंवर सा

इनै फूंपळ सरखी सांभीजो
इनै मूमल जिसड़ी जाणीजो
म्हारी चांद कंवर नै…

गीत । ओळयूं रो

•

गाजै सावणिये रा लोर
वणी में बोलै मधरा मोर
आभै छाई घटा घन घोर

आवै मा थारी ओळयूं'ड़ी
—पियर मन्नै बेग बुलासे ए!

नंणदयां इकलंग कै'यै मन्नै 'थारो नूलो पीवरियो !'
सासू काढै गाळयां संलग—'थारो मूंडो पीवरियो !'

रे'वूं हूं सासरियै ज्यूं ढोर
चलै नी किण रै आगै जोर

गाजै सावणिये रा लोर···आवै मा थारी ओळयूं'ड़ी !

कोस कोस सूं पाणी लाऊं, पगां ऊभाणी दोडूं ए !
फाट्योड़ा हूं गाभा पै'रूं, किण रै आगै बोलूं ए !

काम में डूरूं भोरां भोर
फेर भी मजूं काम री चोर

गाजै सावणिये रा लोर···आवै मा थारी ओळयूं

आधो आधी रात जगूं हूं, ठारूं दही जमावण नैं
दिनभर करूं निदाण, धापै नी घर रा खावण नैं।

छळकूं आंसू मूंडो फोर
फाटै काळजिये री कोर

गाजै सावणिये रा लोर···आवै मा थारो ओळूंडो

गीत : नुंई वहू री वीनती रो

•

ऊगमियो पिरभात सजनजी
जावणदयो मन्नै राज ! २
मन्नै जावण दयो !

डाळां रै डाळां पंछी बोल्या, गूंजी जी मोवण राग
मेंड़ी माथै कागो बोल्यो, धूप ज चढगी ओ छाज
भंवरजी जावण दयो २

दोनूं नणदल हेला मारै, देवर हाकाहूक
सासू जेठाणी लड़सी म्हैंसूं, ईमें रती न चूक
सजनजी ! जावण दयो २

कठै लुकाई ओढ़णती थे, खोलो क्यूंनी आंख ?
सोध सोध हूं हुयी आकथी, बोलो क्यूंनी राज ?
भंवरजी जावण दयो २

आंखड़ल्यां म्हारै काजळ पसरयो, दीख्यो देख्यां काच
कोन्या लाधी पायल खोली, दा क्रंई सूझी आज ?
सजनजी ! जावण दयो २

फोर फोर पसवाड़ो मुळको थे मत, म्हारा राज !
रीतो पड़्यो परीन्डो साजन ! म्हारी जासी लाज !
भंवरजी ! जावण द्यो २
सजनजी ! जावण द्यो २

गीत : चुगली रै चाळै रो

•

दोन्यूं भाई बैंण (मा सूं)—

मायड़ म्हारी ए ! तूं तो कदयन मानै बात
आज सुणावां सुणजे मायड़, इण भावज री घात!

बैंण—

मा म्हे काल जीमण बैठ्या, भावज करी दुभान्त
म्हानै लूखी रोटी चटणी, आप ज गळगच भात
मायड़ म्हारी ए…

भाई—

हां मा ! बैनड़ साची बोलै, मांग्या भात तो मारी लात
हाथ मरोड़्यो हां मा ! म्हारो, किट किट पीस्या दांत
मायड़ म्हारी ए…

मा—

नहि म्हारा बचिया सांची थांरो, मानूं साची बात
आ खुड़पाणी आछी आई ! ईं री बरघराऊं आज !
म्हारै बंट्यां थानै मारै ! बाळणजोगी भाग
पणो करी तो न्यारा करस्यूं, ओ कांई एटरट राज ?
नहि म्हारा बचिआं…

बा'र गांव सूं आयो चौधरी, ढळती मांझळ रात
दिन्नूगं घर चुगली चेतो, माच्यो हाकोहाक
सासू बहू लड़ी आंगणिए, ऊठ्यो चौधरी देख अकाज
धमकायो बेटं नं साचो, खेंच्यो कान मरोड़्यो हाथ
कुळ री संपत लाग्यो दाग !

जोग जोग री बात जगत में, घर डूबयो बहू रो बाप
बांध पोतियो उठ्यो चौधरी, गळं मिल्या सगा अणथाग
ले हळ चाल्यो कंवर खेत नं, सुसरंजी रं पगां लाग
बहु रो करो बडाई सुसरं, ऊपरलं मन लोकां लाज
दोखी बोल्या 'उड़गी राख !'

छाती लाग बाप रं बेटी, फूको झुरझुर छाजो छाम
पाछो घिरतो हूं ले जास्यूं, रो मत बेटी ! धीरज राख
मुंबं नगर हूं जांतो उतर्यो, काम करीजं तू चित लाग
बो'र हुया ब्याही जो घर में, ठंडो पड़ी कळह री आग
चुगली ज्यां घर बां घर पाप !

गीत : गोधमगार घूंघट रा

•

...त भर घूंघटियो निरकाळ
...हुवड़ बान्डी ओढाळ
...ाम ओढणियो सम्भाळ
...ली नुंवं कुवं री ढाळ

वीं रं माथं मंगळ बेवड़ो
बीं रं हाथां डोली जेवड़ो
गोरी चाली लुळती डाळ'क बड़लं उडतो बोल्यो सूवटो
कामण ! चालीजं सम्भाळ, थारो जाडो घूंघटो

...यगी मगन सहेल्यां साथ
...(ंगी गीतां में अणयाग
...ळो रं पंछीड़ं री बात
...हुवड़ मारग पड़ी तड़च

बीं रो मुचग्यो मंगळ बेवड़ो
बीं रो उळझ्यो डोली जेवड़ो
उठी बा ओढणियो झड़कार, याद बानं आयो सूवटो
बीं रं आंख्यां घोर अन्धार'क, बीं रो बैरी बणग्यो घूंघटो !

मन में माचो इण रं राड़
अरे ओ ! मरजादा रो पा'ड़
लोक री लाज धरम री आड
घूंघटो किया देऊं उघाड़

डरपती भरियो कामण वेवड़ो
बीं रं आंख्यां ऊसरचो मेवड़ो
धीरज बंधाती संग सहेल्यां रो, चाल्यो झाझो भूमको
'बैनां! कुण सासरियं वेली?' कोई खुल्यो कळह रो कूंचटो

सू ऊभी खोल किवाड़
ळघां फाढ़ं चोड़ंधाड़
णकर मैं नी करघो उजाड़'
वड़ बोली घूंघट आड

पंरीडं धरतो मंगळ वेवड़ो
होळं सी डोली जेवड़ो
माच्यो घर में गोधम, बड़ल बोल्यो सुगणो सूवटो
'थांरी अकल गई क्यूं मारी ?' थां घर गोधमगारो घूंघटो

ओ जुल्मांगारो घूंघटो
लुगायां छोडो घूंघटो
यां छोडो घूंघटो, थे मायां छोडो घूंघटो

गीत : बाजागारी बहू रो

•

घर में गोधम मचावै
भूठा आंसूड़ा टळकावै
माथै घर भर नै उठावै
आखै बास नै जगावै
रो रो बालम नै रिझावै
आ तो बहू घणी
चाळागारी
मिसियागारी
बाजागारी

मांदी सासू नै सतावै
तोखा तानां सूं खिजावै
देवी देवता मनावै
चूल्है छाणी नी जगावै
दोनूं घरां नै लजावै
आ तो बहू···

माथै ओढ़णो नी राखै
लोगां देख्यां मूंढो ढांकै
घणी कैरी कैरी झांकै
गप्पां अधरबम्ब री हांकै
दौड़ी पीवरिए आ जावै
आ तो बहू···

आ तो मांगणियो मी मीनैं
सीग पाड़ोसण री सीखै
सम्मुख काठला सो डोलै
खावण पीवण घणो टोकै
धूपं दुपारयां आ जावै
आ तो बहू…

गाळयां काढं रात आली
भाग फाट्यां मांडै धाको
कं'वै सुसरै नै हाको
देवै घर चोरां री साली
ऊभी सांपड़तेरू नटायं
आ तो बहू…

झाड़ू काढ़ै घणी दोरी
भरै कचरै सूं मोरी
आ तो बैठी रैं'वै सोरी
कं'वै जेठजी नैं थोरी
इनैं नींद घणी आवै
आ तो बहू…

आ तो कदयन न्हावै
इनैं सैलंग जुयां खावै
मूंढै लाळयां पड़ती जावै
पल्लो लारै टिरतो आवै
हल्लो चूंतरचां मचावै
आ तो बहू…

मिन्दर दियो नी जगावै
हरजस लोगां देख्यां गावै
बैंन स्याणपणो नी भावै
श्राद्ध करं नी जिमावै
तुली छोरां मैं जरकावै
आ तो बहू...

गायां भैंस्यां मैं भी भीरै
ऊभी लाटका मरोड़ै
मूंडै गिरकड़ा घड़ी रै
सूना बाटा भचोड़ै
गोद मोट मैं हुंसावै
आ तो बहू...

गीत : मेळा मगनी नार रो

•

खरची दी भरतार
पर राजी रे किरतार
ो कंइ लेसी संसार
किण री नी दरकार

मेळे ज्यासूं ए !
ओ जी ले ! सखियां नै लार
हूं तो श्यास्यूं ए !
खास्यूं हींडो चचकरीदार !
मन्नै खरची दी—

ओढणिए किन्नार
म्हारो लपकेदार
रेसम कस्सांदार
पग बिछिया झणकार

मेळै जास्यूं ए !
मोला सूं झुणझुणियां बुध ल्यार
हूं तो गास्यूं ए !
गास्यूं गीत घणां रसदार !
मन्नै खरची दी…

हायां मोर मंडासूं
यो ढोडो बीच जड़ासूं
तां चूंपड़ली दिरासूं
ी सोजत केरो लासूं

मेळै ज्यासूं ए !
हस्ती चुड़लै नै खणकार
हूं तो न्हास्यूं ए !
न्हास्यूं पुष्कर शीतळ धार !
मन्नै खरचो दी…

ोलो लासूं चमकीदार
ायां काच पळकेदार
वण्यां हांड्यां टणकेदार
ासो डोरा लच्छेदार

मेळै ज्यासूं ए !
उड़ासूं ढब्बूड़ा रंगदार
हूं तो लासूं ए !
लासं पान मसालेदार !
मन्नै खरचो दी…

गीत : समझावणी रो

•

आ तो तारां री परछांई
इणनं मोतीड़ा मत जाण
इण री करलै तूं पहचाण
'हंसला रे ऽऽऽ बावळा रे !
तट री पत छोड्या घणहाण !
हंसला रे !

आ तो लोट्यां री चनणाई
आंनै दीवटिया मत जाण
आं री करलै तूं पहचाण
आगिया रे ऽऽऽ बावळा रे !
थारो जाय बिरथ बलिदाण
आगिया रे…

आ तो मरुधर री उजळाई
इण नै पाणीड़ो मत जाण
इण री करलै तूं पहचाण
मिरगला रे ऽऽऽ बावळा रे !
तूं भज भज तज मत प्राण
मिरगला रे !

आ तो सावण री पिछवाई
इण नै काळी घटा मत जाण
इण री करलै तूं पहचाण
मोरिया रे ऽऽऽ बावळा रे !
उडीकं किण नैं छत्तरी ताण !
मोरिया रे ··

आ तो घास ढवयोड़ी खाई
इण नैं चारा घर मत जाण
इण री करलै तूं पहचाण
हाथिड़ा रे ऽऽऽ बावळा रे !
तन्नैं लोभ बधासी ठाण !
हाथिड़ा रे···

आ तो दो दिन री तरुणाई
इण नैं अमर असी मत जाण
इणरी करलै तूं पहचाण
भाईड़ा रे ऽऽऽ बावळा रे !
थारै माथै मोत मंडाण
भाईड़ा रे···

गीत : कतवारी रो

•

काया मांगै भाड़ो पूरो, देणो दोरो ए ! कतवारी !
थारो कमज्या री बलिहारी

दो मूंडां री बोघो आळो, ओ कपटी संसार
हाथ पसारयां जाय माजनो, निकमो जीवण भार
पच पच कातै सूत कमावै, तूं पाळै परवार
बिन मैणत जिनगानी कागद, कोरो २ ए ! कतवारी
काया…
थारो…

सधिया सधिया हाथ घेरणी, तकळी लारोलार
झोणी झोणी पूणी कातै, ताकू माला कार
दम दम करै दमकड़ो थारो, बधै सवायो तार
घरकूं मरकूं चरखो चालै, सोरो २ ए ! कतवारी !
काया…
थारो…

किण रो मैणो ? खरी कमाई ! धिन मरदानी नार
हाथ विधाता दोय दिया तो, किण री नी दरकार
पेट भरै कात्यां मूं खात्यां, पड़ै करै नी पार
जणै जणै रो घांपण धोणों, फोरो २ ए ! कतवारी !
काया…
थारो…

ओ चरखो दुखियां रो जीवण, निरधारां आधार
चक्र सुदरसण सरसो चालै, धिन धिन सरजणहार
गांवां गांवां नगरां नगरां, इण री जय जय कार
अण टूट्यो अण खूट्यो हाटां, डोरो २ ए ! कतवारी !
काया···
थारो···

गीत : लेखणी रो

•

पग पग पापाचार लेखणी डिगं मती
सौदागर संसार लेखणी बिकं मती

जिका लालची साधक थारा, तोलं बोल करं नीलाम
धनपतियां री डोढी ऊभा, जिका'क झुक २ करं सिलाम
यां रं हाथां जा'र लेखणी टिकं मती
पग पग······लेखणी······

ज्यांनं झुकता देख लेखणी, लाजं चोता घोर कवाण
अं चापळिया चोठा थारो, ज्यांनं नी ईज्जत री आण
आं री अं जंकार लेखणी लिखं मती
पग पग······लेखणी······

मा'र गोमुखा कपटी बुगला, ज्यां रं बगल छुरी मुख राम
झुरनं पलड़ं रा सोरो अं, छळबळ अटकळ सारं काम
आं नं तू ललकार लेखणी निवं मती
पग पग······लेखणी······

पण थारा साचोड़ा साधक, ज्यां रो मरियां होवं नाम
सावं जोग अराधे आखर, काढं मूंस गळावं चाम
आं सूं तूं परबार लेखणी सिधं मती
पग पग······लेखणी······

ढं'जासी अे महल माळिया, डहसी कोट काळ परवाण
पण जस रै'सी तापसियां रो, अमर जुगां जुग प्राण
आं नं तू बिसरा'र लेखणी छिपं मती
पग पग······लेखणी······

गीत : कन्हैया रो

•

आवै घिर घिर
चिर पिर चिर पिर
बोलै सुगणी सिझ्या फिर फिर
श्याम कन्हैया आभइयै
घनश्याम कन्हैया आभइयै

लंगर लंगर लड़ालूम अै, सावणिए मगनीजै हो
आगीवाण घटावां रा अै, बायरिए सू रीझै हो
नाचै थिर थिर
चिर पिर चिर पिर
बोलै सुगणी सिझ्या फिर फिर
श्याम कन्हैया…

डे'रां डे'रा खेत खळां अै, सरवर घणा पतीजै हो
लूनो झाळां खोळां खाळां, धोरां धोरां धीजै हो
भाजै तिर मिर
घिर पिर चिर पिर
बोलै सुगणी सिझ्या फिर फिर
श्याम कन्हैया…

आभं रं गळ काळी कंठी, जाणं चाख पुरीजं हो
बिड़दाऊ बिरखा रा वेलो, धीजळ पळकं खीसं हो
न्हावं फिर मिर
चिर पिर चिर पिर
बोलं सुगणी सिद्या फिर फिर
श्याम कन्हैया…

गीत : पिसारी रो

•

पीसं चूण परायो पाळं पापी पेट पिसारो—
विधवा नारी रे !
घन दुखियारी रे !

नान्हड़िया रोटी नं भूरं
आ मोड़ी चूल्हो चेतावं
रोय रोय जिनगानी पूरं
पण नी सबद सुणावं
वोखं मारी रे !
जीणो भारी रे !
पीसं चूण…

चूण पीस आ बाल पढावं
आ नी हाथ पसारं
मगर पच्चीसो मन हटकावं
देखं आगं लारं
घरदुवारी रे !
दुनियादारी रे !
पीसं चूण…

पईसा हो तो भरै चाकरी
घर रा जाणै हाजरिया
कूण हुवै पण दुख रो सीरी
नी पी'रा नी सासरिया
बहुवड़ थांरी रे !
क' बैनड़ म्हारी रे !
पीसै चूण…

हाथ थकै माथो चकरावै
छाती रा दो टूक
जगत पीसणो लिख्यो करम में
घोर गरीबी भूख
सैंणगत थारी रे !
हिम्मत नी हारी रे !
पीसै चूण…

गीत : सुलखणी वहू रो

•

ज्यां घर वहू सुलखणी वां घर, सुख सम्पत रो वास
देवता रम्मं आंगणिए

धरम-मात सासू वा मानं, हुकम कदं नी टाळं
पिता सरूपी सुसरो जाणं, सेवा रो व्रत पाळं
समझं सैन वैण सूं पैली, दो घर दूध उजाळं
रीस करं नी कदं किणी पर, कदयन रंय उदास
ज्यां घर वहू……

जेठाण्यां देराण्यां ओल्यां घाली आ नी रड़कं
आधी रात कामकर सोवं, उठ जावं आ तड़कं
भायां सूं बंसी देवरिया, जेठूता हियं हरखं
नणद नाणदा हंस बतळावं, घणकर हेत उजास
ज्यां घर वहू……

पगफेरं रं साथ वळीवर, आवं लिछमी आवं
सासां मायं सेसण घालं, दिन दिन विणज वधावं
घर भर वंधी बुहारी रं'वं, संपत पार न पावं
विगासं हेत विकासं, मनमें मोद मिठास
ज्यां घर वहू……

जीव जड़ी कर पति नैं मानैं, जीवण जोत जगावै
खोटी सीख कदै नी देवै, हेत मान सूं पावै
आदर जोग सदा आ रै'वै, जुग जग नेम निभावै
जी-जो करतां कंठ सुखावै, अमर प्रेम री प्यास
ज्यां घर बहू……

सरवणवंती इसड़ी बहू नैं, देखै जिको सरावै
रूपाळी-गुणवन्ती बहुवड़, बड़भाग्यां घर आवै
लाखां में लाखीणी कोई, सत पत नाव चलावै
लोग कहै धिन धिन कुळवंती, थारो पुन्न प्रकाश
ज्यां घर बहू……

कंठ जद गूंजै पिणिहारो
'गोरबन्द' 'कुरजां' 'सिहयारो'
लाल......

मोटो कुनबो
घणो गरीबो
गायण विरत कमाई
मोल-कोल
आंटीलो पूरो
नेम-धरम पतियाई

'तमाखू' गादो 'सिणगारो'
'कलाळी' जल्लो 'बिणजारो'
लाल... ..

गीत : बै'रूपिए रो

•

लड़्यो बीच चौपाल
गांव में आयो रे ! आयो बै'रूप्यो
ओ चाळागारो बै'रूप्यो
ओ बाजागारो बै'रूप्यो

गाल फुलावै ढोल बजावै
मुळकावै आंख्यां मटकावै
गाबड़ फेरै मूंड हिलावै
नाचै मन मन ताळ
गांव में आयो रे ! आयो बै'रूप्यो

बूढो बीन बणै लंगारै
रंडुवां री ओ नकल उतारै
कुंआरां नै ताना मारै
दे दे मीठी गाळ
गांवों में आयो रे! आयो बै'रूप्यो

चाल बणावै स्वांग सुणावै
टोळाणा बजू पेट दुखावै
भगत बणै लड़नाळ बजावै
गावै माळ — पमाळ
गांव में आयो रे! आयो बै'रूप्यो

लूढो घालै कूट कढावै
अफसर बण नै हुकम चलावै
अगम भखै जोसो बणज्यावै
हरखै बाल गोपाल
गांव में आयो रे! आयो बै'रूप्यो

भांत भांत री बोली बोलै
पेट-भरण गांवां में डोलै
जण जण री मन गुंढी खोलै
मूंजी जावै टाळ
गांव में आयो रे! आयो बै'रूप्यो

गीत : राईकै रो

•

डांग माथै डेरो होवे, रमतो जोगी राईको
मरधर मोभी राईको

झावरी पूछर्यां रा करला, किरकिरिए कानां आळा
आरसी ईडरिया फोई, सूरज मुखिया उल्लाळा
चोखळ ऊंठ झोंपरा ताता, मगन टोडिया मतवाळा
जड़ा नै घण फेरं काढं, म्हाई चोखो राईको
रमतो जोगी······

घोटवीं नळी रा सुगणा, करहलिया मन मोवणा
गुंढीदार रूंआळी आळा, ओछी गोडी सोवणा
रल्ले चीखां ढाण सूड़बग, पड़छ पवन संग होवणा
लाख्योड़ी सांढ्यां नै पाळै-पोखै ओठी राईको
रमतो जोगी······

झोक करै विसराम चश्योड़ा, कइयक उरला घूमै
सांढ्यां देवै बाग टोडिया, उरणै नाचै भूमै
कइयक ऊभा चरै खेजड़ा, कैर कंकेड़ा लूमै
मंगळ मंगळ करै मानवी, घण संतोषी राईको
रमतो जोगी······ —

ओ नी घारं डांफर लूंवा, टोळ री रिछपाळ करं
मोटो लावै मोटो पै'रं, सांवरियो प्रितपाळ करं
घण टावर घर गांव आंतरं, ओ डोलं मगरं मगरं
टोळं रं सुख दुख रो संगी, साचो सोखो राईको
रमतो जोगी……

डांग मा

झाबरी पू
आरसी ई
चोखळ ऊं
जड़ा में

घोटवीं न
गुंढोदार
रल्लै धो
लाल्योड़ी

झोक ध
सांठ्यां
कड़मड़

जोर करै पठ्ठा मस्तावै
ध्यानी पूजा पाठ करै
गप्पी बाज घेसळा मारै
ग्यासा ऊभा साख भरै

'शिव कैलाशपती हर बम बम' सबद सुरग दरसाव !
क' चालो न्हावण नै

पण,
म्हानै कद बोल मिल्या
कद भासा रा द्वार खुल्या रे जर

थे
मन री बात केय तो लो हो

म्हे
भोगां ओ बन्दी जीवण···संताप भयंकर !
जिण रै जो मन भावै म्हानै अरथावै
संदरभ हये ग्याल हुय जावै ··!
अबै जैज नी दिन आथमसी,
हाथ उठेला दोय धूजता
धिन्नवाद थांनै ओ म्हारा साचा मितर !

म्हे गूंगा—
म्हानै बतलाया थे
मुजरो ओ म्हारा साचा मितर !